20 भाषाओं से समृद्ध है लिथुआना का साहित्य : मिंडौगस

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली: लिथुआनिया में लगभग 20 भाषाएं बोली जाती हैं, लेकिन इनमें पोलिश, जर्मन, लैटिन, हिब्रू, रशियन, कतर, लिथुआनिआई, रोमानियन आदि 12 भाषाएं प्रमुख हैं। इन भाषाओं का महत्त्व और उपयोगिता युद्ध, व्यापार और राजनीतिक उतार-चढ़ाव के साथ घटती-बढ़ती रही है। यह बात भाषाशास्त्र संकाय, विलनिअस यूनिवर्सिटी के अध्यक्ष एवं लिथुआनिया के पूर्व संस्कृति मंत्री मिंडौगस क्वितकौस्कस ने कही। वे साहित्य अकादमी और भारत में लिथुआनिया गणराज्य के दूतावास के संयुक्त तत्वावधान में साहित्य मंच कार्यक्रम के मौके पर बहुभाषिक एवं बहुसांस्कृतिक शहर विलनिअस व उसकी सांस्कृतिक/ऐतिहासिक स्मृतियों पर अपना व्याख्यान दे रहे थे।

उन्होंने लिथुआना के चार प्रमुख आधुनिक लेखकों के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि उनके द्वारा चलाए गए साहित्यिक आंदोलनों के द्वारा विलनिअस में बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक परिवेश तैयार हुआ। उन्होंने वहां की प्रसिद्ध कवयित्री जुडिता के बारे में भी बताया, जिसने आधुनिक लिथुआनिआई साहित्य में वहां के पूर्वजों की पीड़ा को प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत-वक्तव्य में कहा कि कोई भी बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक संस्कृति तब तक ही जीवंत रहती है जब तक उसमें परस्पर स्वस्थ संवाद बना रहता है। यह संवाद ही इस परिवेश को उनन्त और लोकप्रिय बनाता है। भारत में लिथुआनिया की राजदूत डा. डायना ने कहा कि दिल्ली जो अपने आप में एक बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक शहर है, उसमें यह वक्तव्य और महत्त्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि दोनों शहरों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि एक दूसरे को चिह्नित करती है।